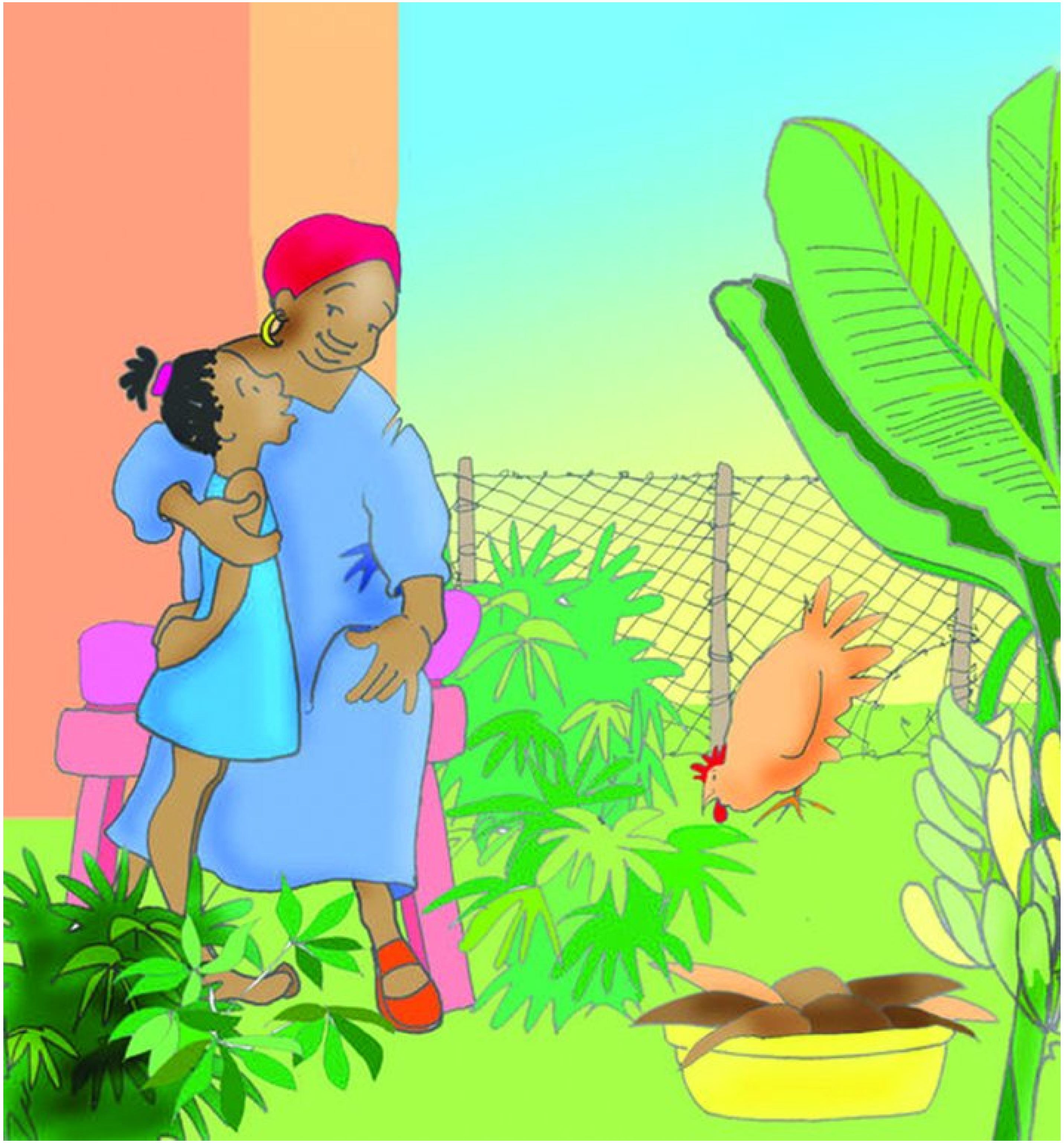


दादी के केले

Author: Ursula Nafula
Illustrator: Catherine Groenewald
Translator: Arvind Gupta

storyweaver Community

पठन स्तर ४



दादी का बगीचा बहुत सुंदर था. वहाँ पर ज्वार, बाजरे, मिलेट के साथ-साथ कंद भी लगे थे. पर उनमे सबसे अच्छे दादी के केले थे. वैसे दादी के कई नाती-पोते थे, पर मुझे अपने दिल में इतना ज़रूर पता था कि मैं दादी की सबसे चहेती पोती थी.

वो अक्सर मुझे अपने घर बुलाती थीं. वो कई बार मुझे अपने गोपनीय रहस्य भी बताती थीं. परंतु एक रहस्य उन्होने मुझे कभी नहीं बताया - कि वो अपने कच्चे केलों को कैसे पकाती थीं.



एक दिन मैने दादी के घर के बाहर एक टोकरी रखी देखी जो पुआल से भरी थी. जब मैने दादी से उसके बारे में पूछा तो उन्होने मुझे बस यह उत्तर दिया. "यह मेरी जादुई टोकरी है."

टोकरी के पास कई केले के पेड़ के पत्ते भी बिखरे हुए थे, जिन्हें दादी समय-समय पर उलटती-पुलटती रहती थीं. मैं उनके बारे मे जानने को बहुत उत्सुक थी. "यह पत्ते किसके लिए हैं, दादी?" मैने पूछा. पर मुझे जो उत्तर मिला वो सिर्फ़ यह था, "यह मेरे जादुई पत्ते हैं."



मुझे दादी, उनके केलों, केलों के पत्तों और उस पुआल से भरी टोकरी को निहारने में बड़ा मज़ा आ रहा था. पर तभी दादी ने मुझे किसी काम के बहाने मां के पास भेज दिया. "दादी, तुम क्या करने जा रही हो. ज़रा मुझे भी वो देखने दो."

"बेटी, मुझ से ज़्यादा बहस मत करो. ज़िद्द मत करो. मैं जो कहूँ वो करो," दादी ने ज़ोर देकर कहा. फिर मुझे मां के पास भागना ही पड़ा.



जब मैं वापिस लौटी, तो दादी अपने घर के बाहर बैठी थीं. पर वहाँ से टोकरी ओर सारे केले नदारद थे.

"दादी, वो टोकरी कहाँ है, और वो सारे केले कहाँ हैं ....." पर दादी ने मुझे एक ही उत्तर दिया, "वो मेरी जादुई जगह पर रखे हैं." दादी का जवाब सुनकर मैं बड़ी उदास हुई!



दो दिन बाद दादी ने मुझे उनके कमरे मे से छड़ी लेने भेजा. जैसे ही मैने दादी के कमरे का दरवाज़ा खोला, वैसे ही पके केलों की तेज़ खुशबू ने मेरा स्वागत किया.

और वहाँ पर, अंदर वाली कोठरी मे दादी की बड़ी जादुई टोकरी रखी थी. दादी ने टोकरी को बड़े करीने से एक पुराने कंबल से ढंक कर रखा था. मैं कंबल को उठाकर पके केलों की सुंदर महक को सूँघा.



तभी दादी की ज़ोर की चीख सुनकर मैं सहमी. "तुम वहाँ इतनी देर से क्या कर रही हो? जल्दी करो और मेरी छड़ी लेकर आओ."

"तुम इतनी मुस्कुरा क्यों रही हो?" दादी ने मुझसे पूछा. उनके सवाल पूछने से मुझे इस बात का एहसास हुआ कि दादी की रहस्यमय जगह खोजने के बाद मैं अब इतनी खुश थी कि मैं अभी भी हंस रही थी.



अगले दिन जब दादी मेरी मां से मिलने घर आईं, तो फिर मैं तुरंत दादी के घर भागी. मैं वहाँ जाकर फिर से पके केलों को देखना चाहती थी.

मैने केले के गुच्छे में से एक केला तोड़ा और फिर उसे अपने फ्रॉक मे छिपाया. फिर मैने टोकरी को संभाल कर वापिस ढंका. उसके बाद मैं चुपके से घर के पीछे गई और मैने वो केला खाया. मैंने अपने जीवन मे उतना मीठा केला पहले कभी नहीं खाया था.



उसके अगले दिन जब दादी अपने बगीचे में सब्ज़ियाँ तोड़ रही थीं, तब मैं फिर से केलों को देखने कोठरी मे गई. अब तक सभी केले पक चुके थे.

मैं अपने आपको रोक नहीं पाई. मैनें उनमें से चार केले उठाए. बाहर से मुझे दादी के खाँसने की आवाज़ सुनाई दी. मैनें किसी तरह केलों को अपने फ्रॉक मे छिपाया, और फिर दबे कदम दादी के सामने से निकल गई.



अगले दिन बाज़ार का दिन था. इसलिए दादी बहुत सुबह-सुबह ही उठ गईं.

वो हमेशा पके केले ओर कंद बेंचने के लिए बाज़ार जाती थीं. उस दिन दादी के घर जाने की मुझे कोई जल्दी नहीं थी. पर मैं बहुत देर तक दादी से बच नहीं पाई.



उस दिन देर शाम को मेरे माता-पिता और दादी ने मुझे बुलाया. बुलावे का कारण मुझे अच्छी तरह पता था. उस रात को जब मैं सोने के लिए लेटी तो मैनें प्रण किया कि मैं फिर से कभी दुबारा चोरी नहीं करूँगी.

न दादी की, माता-पिता की, मैं अब से कभी किसी की चोरी नहीं करूँगी.

Story Attribution:

This story: दादी के केले is translated by Arvind Gupta . The © for this translation lies with Arvind Gupta, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Grandma's Bananas', by Ursula Nafula . © African Storybook Initiative , 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Grandmother sitting in her garden , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Grandmother and grand daughter in the garden , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Grandmother sitting in her garden , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Grandmother pointing at her running grand daughter and a hen, by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Granmother and grand daughter talking in the garden , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Young girl touching a giant leaf, by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Young girl talking to her grandmother at the doorway , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Young girl eating a banana under a banana tree, by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Grandmother and grand daughter in the garden , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Young girl standing behind her grandmother who is carrying a fruit basket, by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 11: Sad family standing in a garden , by Catherine Groenewald © African Storybook Initiative, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

दादी के केले

(Hindi)

दादी सारे केले कहाँ छिपाकर रखती हैं?

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.